UG study material for Students of History

Subject : History

class : B.A. Part III (Honours)

Paper : VII

Topic : Main Causes of the Chinese Revolution of 1911

(1911 ई० की चीनी क्रांति के मुख्य कारण)

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara
(V.K.S.U, Ara)
Email : rajivnayan03@gmail.com

Scanned by CamScanner

प्रश्न :- 1911 की चीनी क्रान्ति के कारणों का वर्णन करें।
Describe the causes of the Chinese Revolution of 1911.

Ans :- चीन के राजनीतिक इतिहास में 1911 ई० की राज्यक्रांति का वही महत्व है, जो लगभग फ्रांसीसी इतिहास में 1789 ई० की क्रांति का और भारतीय इतिहास में 1857 ई० के विद्रोह का है। चीनी राज्यक्रांति के कारणों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - आधारभूत कारण एवं तात्कालिक कारण। अफीम-युद्ध के पश्चात् ही चीन में राष्ट्रवादी स्वर फैलने लगे थे और कालांतर में कमजोर मंचू सरकार एवं विदेशियों के बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध जनमत निर्मित होने लगा था। 1911 ई० की चीनी राज्य-क्रांति के आधारभूत कारण निम्नलिखित थे -

(1) बढ़ती आबादी और आर्थिक अधोगति - चीन की आबादी तीव्र गति से बढ़ रही थी और देश में उत्पन्न खाद्य-सामग्री जनता के लिए पर्याप्त नहीं थी। 1885 ई० से 1911 ई० के बीच वहाँ 6 करोड़ जनसंख्या-वृद्धि हो गई थी। लेकिन सरकार द्वारा अधिक खाद्यान्न उत्पादन हेतु प्रयत्न नहीं किये गये। इसके अतिरिक्त बाढ़ एवं दुर्भिक्षों ने रही-सही कसर पूरी कर दी। 1910-11 ई० में चीन की अनेक नदियों में भयंकर बाढ़ आये, जिनसे

Scanned by CamScanner

न केवल खेती ही नष्ट हुई, अपितु हजारों गाँव भी बह गये। लाखों लोग बेघर होकर विस्थापित हो गये, और इनके समक्ष आजीविका की समस्या उत्पन्न हो गई। अनुमानतः, 1910-11 ई. की बाढ़ों के कारण लगभग 30 लाख मनुष्यों ने भूख के कारण प्राण गँवाये। प्रायः हर साल दुर्भिक्ष पड़ते रहते थे एवं पर्याप्त अन्न के अभाव में लोगों को काल का ग्रास बनना पड़ता था। जब आर्थिक दृष्टि से जनता की इतनी दुर्दशा हो, तो यह स्वाभाविक था कि वे विद्रोह पर उतारू हो गये।

(2) <u>विदेशों में पलायन से वैदेशिक संपर्क</u> – अपने देश की आर्थिक दुर्दशा से परेशान होकर बहुत-से चीनी लोगों ने इस समय आजीविका की तलाश में विदेशों में जाकर बसना प्रारंभ कर दिया था। शुरू में चीनी लोग संयुक्त राज्य अमेरिका में जाया करते थे, परंतु 1890 ई० में वहाँ की सरकार ने चीनी लोगों के खिलाफ अनेक कानून स्वीकृत किए, और इनके लिए अमेरिका में जाकर बस सकने का मार्ग बन्द हो गया, फिर भी 1911 में संयुक्त राज्य अमेरिका में बसे हुए चीनियों की

Scanned by CamScanner

संख्या तीन लाख के लगभग हो गई थी। तब हवाई द्वीप, फिलिप्पीन, एवं मलाया में चीनियों ने बसना शुरू किया, परंतु बाद में वहाँ की सरकारों ने उनपर रोक लगाने हेतु कानून बनाना आरंभ कर दिया। दक्षिण अमेरिका के विभिन्न देशों में भी चीनी लोग कुली या गुलाम के रूप में कार्य करने के लिए ले जाये गये। इतनी बड़ी संख्या में चीनियों का विदेश जाना यह इंगित करता है कि चीनी लोगों की आर्थिक दृष्टि से कितनी दुर्दशा थी। पर चीनियों के इस प्रकार विदेश जाने का एक परिणाम यह भी हुआ कि विदेशों में निवास करने वाले चीनी लोगों को नए विचारों के संपर्क में आने का अवसर मिला, और यह बात चीन में क्रांति की भावना को विकसित करने में बहुत सहायक हुई। इसके अतिरिक्त, चीन में शिक्षण-संस्थाओं के अभाव में 1905 ई. के बाद बहुत-से चीनी विद्यार्थी अमेरिका और यूरोप जाने लगे और कुछ पड़ोसी जापान में। ये विद्यार्थी इन देशों से अत्यधिक प्रभावित हुए एवं इनकी तर्ज पर चीन में सुधार के पक्षपाती हो गये। 1898 ई० में जो चीनी

Scanned by CamScanner

⇒ 1911 ई० की क्रान्ति के पूर्व चीन में अनेक राजनीतिक एवं क्रांतिकारी दल बन गये थे, जिनमें तुंग मेंग हुई, व्हाईट ड्रैगन सोसाइटी, मर्ने टू बी स्ट्रांग सोसाइटी, ह्यूमेन सोसाइटी, क्वांगसी सोसाइटी एवं राष्ट्र-मुक्ति संघ उल्लेखनीय है।

क्रान्तिकारी नेता जापान में आश्रय ग्रहण करने के लिए विवश हुए थे, वे चीनी विद्यार्थियों में बड़े उत्साह से अपने विचारों का प्रसार कर रहे थे।

(3) क्रांतिकारी दलों का संगठन- यूँ तो चीन में क्रान्तिकारी दल पहले से ही विद्यमान थे एवं बॉक्सर विद्रोह के दमन के पश्चात् बहुत-से क्रांतिकारी दल नष्ट हो गये थे, परंतु चीनियों के मन से क्रांति की भावना मिटी नहीं थी। फलतः चीन में पुनः क्रान्तिकारी पार्टियाँ संगठित होने लगी थीं। इसके अलावा, पाश्चात्य देशों से उच्च शिक्षा प्राप्त करके जो लोग स्वदेश लौट रहे थे, वे यूरोप के ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ वहाँ की क्रांतिकारी भावनाओं को भी अपने साथ ला रहे थे। इनमें डॉ० सनयात सेन एवं कांग यू वेई की अग्रणी भूमिका थी। 1898 ई० में इन क्रांतिकारियों को चीन छोड़कर बाहर भागना पड़ा एवं डॉ० सनयात सेन ने जापान जाकर आश्रय लिया। तोक्यो में रहते हुए उसने अपने दल को पुनर्संगठित कर तुंग मेंग हुई नामक एक नये क्रान्तिकारी दल का निर्माण किया। इस दल के लोग मंचू राजवंश का अंत कर Republic (गणतंत्र) की

Scanned by CamScanner

स्थापना के पक्षधर थे। शुरू में इस दल में चीनी लोग सम्मिलित हुए, जो विदेशों में बसे हुए थे। धीरे-धीरे चीन में भी इसकी शाखाएँ स्थापित हुईं। सेना के सिपाहियों में भी यह दल अपना कार्य कर रहा था, और इसके प्रयत्नों से 1906-07 और 1910 में अनेक जगहों पर विद्रोह हुए।

(4) समाचारपत्रों की भूमिका - छापेखाने का आविष्कार सबसे पहले चीन में ही हुआ था। परिणामस्वरूप चीन में समाचार पत्र अत्यधिक संख्या में निकलते थे। चीन के राष्ट्रवादी समाचारपत्र भी इस समय सक्रिय थे। इन समाचारपत्रों ने जनता का ध्यान चीन की गिरती अवस्था की ओर आकृष्ट किया और लोगों को इस बात की चेतना दी कि जबतक चीन में भ्रष्ट मंचू शासन का अंत नहीं होता, तबतक उनका कल्याण नहीं हो सकता। इस प्रकार, समाचार-पत्रों ने लोगों में क्रांतिकारी भावना भरकर चीन में क्रांति का रास्ता प्रशस्त किया।

Scanned by CamScanner

(5) <u>तात्कालिक कारण</u> - क्रांति का श्रीगणेश 10 अक्टूबर, 1911 ई० को हैन्को में हुआ। वहाँ एक दिन बम-विस्फोट हुआ। सरकार द्वारा उस स्थान की जाँच करने पर यह मालूम हुआ कि वह जगह क्रांतिकारियों के बम बनाने का अड्डा था। सरकार ने अनेक क्रांतिकारियों को पकड़कर सजा देना प्रारंभ किया। इसके फलस्वरूप, वूचैंग की सेनाएँ उत्तेजित हो गईं। उन्होंने अपने कमाण्डर ली-यूआन-हुंग को अपना नेता बनाकर क्रांति का उद्घाटन किया। उसने हैन्को, हैन्यांग और अगल-बगल के इलाकों पर अधिकार कर लिया। क्रान्ति की लपटें चारों ओर फैलने लगीं। शान्तुंग प्रान्त ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा कर दी। इसी प्रकार, बहुत से प्रान्तों में स्थानीय विद्रोह हुए। वूचैंग में स्वतंत्र प्रांतों

के प्रतिनिधियों को मिलाकर एक क्रांति कौंसिल (Revolutionary Council) का निर्माण हुआ।

इसी बीच शंघाई में सैनिक सरकार की स्थापना कर दी गयी। चू-तिंग चैंग विदेश मंत्री नियुक्त हुआ। इसने दूसरे देशों से क्रांतिकारियों के साथ सहानुभूति प्रकट करने की अपील की।

विद्रोह की सफलता को देखते हुए देखकर पेकिंग में सरकार ने नेशनल एसेम्बली को वैध राजतंत्र के सिद्धांत निश्चित करने का अवसर देकर वातावरण को शान्त करने की चेष्टा की। युआन-शी-काई को फिर से बुलाकर जल और थल सेनाओं का सुप्रीम कमाण्डर बना दिया गया। नेशनल एसेम्बली ने इसे अपना मंत्री चुना।

Scanned by CamScanner

परन्तु, नानकिंग नगर पर लोकतंत्रीय सेनाओं का अधिकार हो गया। नानकिंग को दक्षिणी लोकतंत्र की राजधानी बनाया गया और डॉ० सनयात सेन को नानकिंग सरकार का अध्यक्ष बनाया गया। मंचू सरकार ने जब देखा कि क्रांतिकारियों को सफलता प्राप्त होती जा रही है तो उसने संधि-वार्ता शुरू की। सरकारी सुप्रीम कमाण्डर युआन-शी-काई तथा लोकतंत्रीय नेता ली-युआन-हुंग की बीच समझौते की बातें चलीं। सनयात सेन नानकिंग सरकार के अध्यक्ष का पद छोड़ने के लिए तैयार थे, अगर मंचू राजवंश का शासन समाप्त हो जाता और युआन-शी-काई लोकतंत्रवादी बन जाता।

अंततः, 12 फरवरी, 1912 ई० को दोनों पक्षों में समझौता हो गया। मंचू

Scanned by CamScanner

सम्राट ने गद्दी छोड़ने तथा युआन-शी-काई को लोकतंत्र की स्थापना करने के अधिकार देने की घोषणा की। डॉ॰ सनयात सेन ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया और युआन को लोकतंत्रीय चीन का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया। इस प्रकार, संसार के सबसे विशाल और विस्तृत देश में बिना किसी रक्तपात के क्रांति सम्पन्न हो गयी। सहस्त्रों वर्ष पुरानी राज्य-परंपरा विस्मृति के गर्भ में समा गयी।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि चीन की जनता में मंचू राजवंश के प्रति असंतोष और विरोध की भावनाओं की चरम परिणति 1911 ई॰ की चीनी क्रांति के रूप में प्रस्फुटित हुई। लोगों ने समझ लिया था कि विदेशी शोषण तथा

देश की बढ़ती समस्याओं के लिए मंचू सरकार दोषी है और इसके संतोषजनक समाधान की क्षमता उसमें नहीं है। चारों तरफ दुर्बलता, अराजकता, विघटन और पतन का साम्राज्य था अतः, चीनी जनता के समक्ष अक्षम मंचू राजवंश को उखाड़ फेंकने के अलावा दूसरा विकल्प नहीं बचा था, जिसकी परिणति 1911 ई० की चीनी क्रांति के रूप में हुई।

By: Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara
Email: rajivnayan03@gmail.com

Scanned by CamScanner